दिनांक–24.02.2025

B.A.PART -III HONS. (Philosophy)

Q.1. शंकर के ब्रह्म एवं रामानुज के ईश्वर की तुलना कीजिए।

Ans. शकराचार्य के अनुसार ब्रह्म एक अद्वैत सत्ता है। किन्तु रामानुज के ब्रह्म में हम तीन चीजों को पाते हैं। वे हैं ईश्वर, आत्मा और जड़त्व।

- शंकर के अनुसार ब्रह्म व्यक्तित्वहीन (Impersonal) है। किन्तु रामानुज ने ब्रह्म में व्यक्तित्व का आरोपण किया है।
- शंकर के मतानुसार ब्रह्म निर्गुण है। रामानुज ने शंकर के इस विचार की आलोचना करते हुए बतलाया है कि निर्गुण ब्रह्म के विचार को शंकर ने उपनिषद से ग्रहण किया है। रामानुज ने सगुण ब्रह्म को माना है।
- वेदान्त दर्शन में तीन प्रकार के भेदों को माना गया है—सजातीय भेद, विजातीय भेद, और स्वगत भेद। शंकर के अनुसार ब्रह्म में उपरोक्त किसी प्रकार का भेद नहीं, किन्तु रामानुज ब्रह्म में स्वगत भेद का होना मानते हैं।
- रामानुज के अनुसार ब्रह्म इस विश्व का निर्माता, संरक्षणकर्त्ता एवं विनाशकर्त्ता है, किन्तु शंकर ब्रह्म को इन कार्यों से विलग मानते हैं, क्योंकि ये सारे कार्य ईश्वर के कार्य है।
- रामानुज के दर्शन में ईश्वर और ब्रह्म एक दीख पड़ते हैं किन्तु शंकर के दर्शन में ऐसी बात नहीं। शंकर ईश्वर को आभास मात्र मानते है जबकि ब्रह्म यथार्थ सत्ता है।
- शंकर के अनुसार ब्रह्म अमूर्त (Abstract) है, किन्तु रामानुज ने ब्रह्म को मूर्त माना है, क्योंकि ब्रह्म में Matter concrete है।
- शंकर के अनुसार मोक्ष की प्राप्ति पर आत्मा ब्रह्म के बराबर (Identical) हो जाती है, किन्तु रामानुज के अनुसार मोक्ष-प्राप्ति पर आत्मा ब्रह्म के समान (Like) हो जाती है।

डॉ. श्रवण कुमार मोदी
सहायक प्राध्यापक, दर्शनशास्त्र विभाग
शिवदेनी राम अयोध्या प्रसाद महाविद्यालय
बारा चकिया,पूर्वी चम्पारण
मो0–9608685335
Email Id- shrawankumarmodi1973@gmail.com